भला, सेमल के फूल से लाल रंग क्यों नहीं निकला?

तेजी ग्रोवर

दिल्ली में एक संस्था है जो कपड़ों पर रंग करने के लिए फूलों, पत्तों-छिलकों आदि से बने रंगों का उपयोग करती है। मेरा परिचय उस संस्था में काम कर रही कुसुम तिवारी से हुआ जो बहुत समय से अच्छा-सा हरा रंग बनाने का तरीका खोज रही थी। हम लोगों की दोस्ती रंगों के कारण हुई, जो कि सबसे पक्की दोस्ती हो सकती है। सेमल के लाल फूलों से मार्च का महीना इतना सुन्दर हो उठा था कि शहरों की सड़कें दहक रही थीं। मैंने अमृतसर की मालरोड से सेमल के फूल इकट्ठा किए और उन्हें एक बर्तन में करीब 20-25 मिनट तक उबाल लिया। मैं लाल रंग की उम्मीद लगाए बैठी थी। बर्तन में जो गाढ़ा पदार्थ तैयार हुआ वह काफी लिसलिसा भी था, जैसे, उसमें गोंद मिली हुई हो। फिर वही अपनी पुरानी मित्र फिटकरी को भी मैंने मिला दिया और कैनवास पर पेन्टिंग करने बैठ गई।

मैंने उस चिपचिपे घोल को पूरे कैनवास पर बिछा दिया, गूदे समेत। यह सोचकर कि गूदे के नीचे देखें क्या रंग आता है, जब मैं उसे खुरच कर निकाल दूँगी।

जब रंग मेरे सामने आया तो मुझे विश्वास नहीं हुआ – पूरे कैनवास पर जहाँ गूदा नहीं था वहाँ लौकी के रंग-सा हरा रंग चमक रहा था। सूखने पर मैंने वह जगह खुरच कर साफ कर दी जहाँ गूदा चिपक गया था। नीचे भूरा रंग चमक रहा था क्योंकि गूदा काफी देर कैनवास पर पड़ा-पड़ा सूखता रहा था। तो जनाब लौकी-सा हरा और हल्का भूरा बेस तैयार था।

मैंने भूरी रेखाओं पर कुछ पानी डालकर उन्हें मिटाने की कोशिश की, लेकिन वे ज़रा भी फीकी नहीं पड़ीं। क्या सेमल की गोंद इसका कारण थी? पता नहीं!

लेकिन भला लाल फूलों से हरा रंग कैसे बन गया होगा? मैं नहीं जानती, लेकिन मेरा अनुमान है कि मैंने पहली बार रंग उबालने के लिए एलुमीनियम का बर्तन इस्तेमाल किया था। जबकि आमतौर पर मैं स्टील के बर्तन में रंग उबाला करती हूँ। हो सकता है रंग इसी वजह से हरा हो गया हो। हालाँकि लाल रंग तो लाल पँखुड़ियों को मसलने से भी नहीं निकला था।

हो सकता है आपको अभी भी ज़मीन पर पड़े हुए सूखे सेमल के फूल कहीं-कहीं मिल जाएँ। गिलहरियाँ और हिरण होंगे, तो काफी फूल उनके पेट में जा चुके होंगे। इसलिए फूल चुनते समय उनका ध्यान अवश्य रखें जिनके लिए ये फूल खाने के काम में आते हैं।

नई दोस्त कुसुम तिवारी को मैंने तुरन्त फोन करके बताया, "कुसुम, दिल्ली की सड़कों पर इस समय तुम्हारे लिए सेमल के फूलों का हरा रंग बिछा हुआ है। जाओ, बटोर लाओ और खूब कुर्तों-कुर्तियों को हरे रंग में रंग डालो!"

बात करते समय मुझे अपने दादा की खूब याद आई जिनके सेमल के तकिए को लेकर हम भाई-बहनों में खूब झगड़ा होता था। सेमल की रुई के फाहे जब आसमान में उड़ते हैं, तब भी मुझे अपने दादा के तकिए की याद आती है। "सिम्बल दा सिरहाना" जैसे पंजाबी में हम लोग कहा करते थे।